हे हरि सुन्दर, हे गुरु सुन्दर

हे सुन्दर प्रभु श्रीहरि, हे महिमावान श्रीगुरु,
मैं आपके चरणकमलों पर अपना शीश नवाता हूँ।

आप ही समस्त सघन वनों में कृष्णवर्णी, अँधेरी छटा हैं।
आप ही समस्त पर्वतों के ऊँचे-ऊँचे शिखर हैं।

आप ही समस्त नदियों की चंचल और तीव्र धारा हैं।
हे श्रीगुरु, आप ही महासागरों की गम्भीर प्रशान्ति हैं।

हे श्रीगुरु! जो दुःखी हैं, उनकी वेदना में आप हैं।
योगीजनों के आनन्द में आप हैं।

डिज़ाइन व अंग्रेज़ी भाषान्तर ©२०२१ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

हे हरि सुन्दर, हे गुरु सुन्दर

गुरुनानकदेव जी द्वारा रचित भजन

परिचय : जुलियन एल्फ़र

यह सुन्दर भजन श्री गुरुनानकदेव जी द्वारा रचित है जो सिख धर्म के प्रवर्तक थे। यह भजन उनकी इस प्रमुख सिखावनी की उत्कृष्ट, प्रेमल अभिव्यक्ति है—कि वे एक ही भगवान जो परमगुरु हैं, बिना किसी भेद-भाव के, सबमें समान रूप से वास करते हैं।

गुरुनानकदेव जी का जन्म सन् १४६९ में भारत के पंजाब राज्य में एक हिन्दू परिवार में हुआ था। वे परमानन्द में लीन ब्रह्मज्ञानी थे जिन्होंने गृहस्थ जीवन जिया, दो पुत्रों के पिता बने और कुछ समय के लिए पटवारी की नौकरी की जब तक कि उन्हें यह एहसास न हुआ कि आध्यात्मिक राह पर चलने के लिए उन्हें अपने अन्तर से उठने वाली पुकार का अनुसरण करना है। वे उस एक परम सत्ता की उपस्थिति के प्रति जिज्ञासुओं के दिलों को जागरूक करने हेतु कृतसंकल्प थे जो उस समय के समाज में प्रचलित धार्मिक, सामाजिक व जातिवाद के संकीर्ण भेदों से परे है।

अपने बचपन के मित्र, भाई मरदाना जी के साथ नानकदेव जी ने बड़े पैमाने पर सम्पूर्ण भारत व भारत के बाहर व्यापक रूप से यात्राएँ की। मरदाना जी एक मुसलमान थे और 'रबाब' बजाया करते थे जो सारंगी जैसा एक वाद्ययन्त्र है। यात्राओं के दौरान नानकदेव जी ने उन सर्वव्यापी श्रीगुरु की आराधना में भजनों की रचना की जिनकी दिव्य चैतन्य उपस्थिति के दर्शन उन्हें जहाँ देखो वहीं होते। 'हे हरि सुन्दर, हे गुरु सुन्दर' भी ऐसा ही एक भजन है।

'हरि' नाम उतना ही प्राचीन है जितने कि वेद। यह ब्रह्म का, ब्रह्माण्ड के कण-कण में विद्यमान सर्वव्यापी चिति का द्योतक है। 'हे हरि सुन्दर' भजन हमें आमन्त्रित करता है कि हम उस एकमेव परमात्मा को पहचानें जो प्राकृतिक जगत में विद्यमान आश्चर्यों में दिखाई देता है और बिना किसी भेदभाव के, सभी के हृदय में पूर्ण रूप से वास करता है। जहाँ इस भजन का मानस-चित्रण भव्य और शानदार है, वहीं इसका अन्तिम अन्तरा हमें उसे पहचानने का मार्ग दिखाता है जो हमारा अन्तरंग है, जिससे हम सुपरिचित हैं—वह प्रत्यक्ष अनुभूति जो हमें अपने हृदय में ही होती है।

सिद्धयोग संगीतकार, विजु कुलकर्णी द्वारा गाए गए इस भजन का संगीत राग यमन में है; यह राग भक्ति, शान्ति और करुणा के भावों को जगाता है। इस भजन को सुनने, इसके साथ-साथ गाने या

फिर इसके अर्थ पर चिन्तन करने से हम अपने आप को उस ज्ञानप्रद अनुभव के प्रति ग्रहणशील बना देते हैं जो इस दिव्य भजन में अभिव्यक्त किया गया है।

विजु ताई द्वारा गाए गए इस सुन्दर गायन को सुनने के बाद, इसका प्रफुल्ल ध्रुवपद "हे हरि सुन्दर, हे गुरु सुन्दर" मेरे अन्दर बार-बार चल रहा है। यह पूरे भजन में गुँथा हुआ है और इस उल्लासमय, प्रेमल व कृतज्ञतापूर्ण अभिज्ञान को प्रकट करता है कि "यह सब कुछ आप ही हैं!" हमारे पास यह सुअवसर है कि हम इस ध्रुवपद में मुदित हो जाएँ और इसे अपने दैनिक जीवन में गूँजने दें : "हे हरि सुन्दर, हे गुरु सुन्दर!"

©२०२१ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।